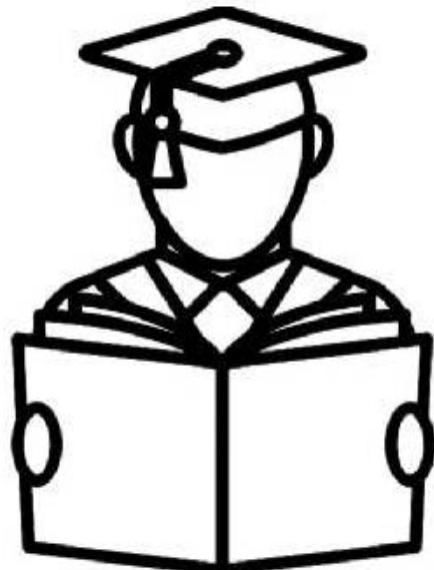


चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."



"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

दर्शन शास्त्र

पाश्चात्य दर्शन

①

कालसंक्रमानुसार विकास (chronological development)

- i) अर्थीक काल \Rightarrow Plato
Aristotle (c. B.C. - 400 B.C.)
- ii) मध्यकाल *
- iii) उत्तराधिक काल (400 A.D. — 1500 A.D.)
- iv) उत्तराधिकीन (1500 A.D. — 1900 D.C.) \rightarrow डेकांट
 \rightarrow to Hegel.
 \rightarrow G - II topic.

i) अर्थीक काल : पाश्चात्य दर्शन की शुरूआत अर्थीक दर्शन से होती है। प्रथम अर्थीक दर्शन पोलिज था जिसके अनुसार 'जल' ही प्रत्यक्षता है। अर्थीक प्रक्रिया में प्लेटो के दर्शन में पहली बार दर्शन सुव्यवस्थित रूप से दिखायी देता है। अर्थीक दर्शन में सुकात, लेटो, उत्तराधिक का काल सर्वप्रथम दर्शन का नाम है भावना जाता है।

ii) मध्यकाल : दूर्ग गुरु व दर्म अद्या सत्पता के मानदण्ड पर, मध्य पुण को अन्यकार पुण नहीं जाता है। पहा कैरेंजिक व्यवस्था का अन्याय था। कैरेंजिक पर्ची की छुट्टरता थी। जीवन का प्रत्येक यहाँ पर्ची के अनुसार अङ्गशासित होता है। इसके कारण का अतिरिक्त माना जाता है।

कैरेंजिक \rightarrow Prod

\downarrow

भर्ती

\downarrow

पोष

\downarrow

पुरुषपोष



\downarrow

शर्वी

\downarrow

I

J

Freedom and feel

\downarrow

जन्म

\downarrow

पाप

\downarrow

संतानों में प्रविष्ट

\downarrow

जन्म हो जाएँ

\uparrow

कृपा

\uparrow

पाप हो जाएँ

\leftarrow

जन्म हो जाएँ

\uparrow

जन्म हो जाएँ

iii) अाधुनिक दर्शन :

⇒ मार्टिन लूथर किंग के नेतृत्व दर्शन सुधार उदाहरण

धर्म

राजसत्ता

विज्ञान की दबोच - बर्डिलि

कापटिकल

Heliocentrism

ब्रॉडबिस

अाधुनिक पैदलत \leftarrow धर्म \rightarrow ऐसी धर्मी का उदान होना

परम्पराएँ \rightarrow ऐसे, धर्म के छोटे उदान
पृष्ठभूमि द्वारा प्रभावित

→ दर्शन चिंतन

→ विज्ञान का प्रभाव

→ धर्मगुरु द्वारा धर्म व्यवहार की अजाप और भव व लुटी हुई कांडा
पर धर्म का लिखण

→ उनाध्या व विश्वास के बंदोर्प संशोधन प्राप्त करना प्राप्ति
क्षयज्ञ

→ अाधुनिक दर्शन के अन्तर्गत हुए डिकार्ट हे जैकर हीगल तक आ
आवेदन करना है

iv) समकालीन परम्पराएँ दर्शन : शाताली के काद का दर्शन

स्तर एवं रखेल मे जैकर उत्तराधिकार तक अधिकार करना है

କାନ୍ଦିଲାରୁ ପାଇଁ ଏହାରୁ କାନ୍ଦିଲାରୁ
କାନ୍ଦିଲାରୁ ପାଇଁ ଏହାରୁ କାନ୍ଦିଲାରୁ

जही है प्रति प्राधिक शुणो के अन्तर के बीच
वस्तु की सत्ता को मानने का लिए उपयोग नहीं है
परं वर्कले पर कहते हैं कि पहले हम इस उपयोग
और बाद में पर कहते हैं कि हम इस दिलापी
नहीं देता।

(v) प्रत्यक्षा नहीं : वर्कले के अनुसार वस्तु की व्यतीव्य सत्ता है
उसे कभी प्रत्यक्षा नहीं होता अतः उसकी सत्ता को
स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(vi) अनुमान से भी नहीं : अनुमान से भी आधार वस्तु की सत्ता
का ज्ञान नहीं किया जा सकता। अनुमान के लिए भी
सर्वप्रथम प्रत्यक्षा का होना आवश्यक है। प्रत्यक्षा से केवल
प्रत्यप मिलते हैं घे प्रत्यप मानसिक है। अतः वे ज्ञान मिलते हैं
प्रत्यपों के आधार पर आधार गोतिक वस्तु की सत्ता को
अनुमानित नहीं किया जा सकता।

(vii) कारण-कार्य सम्बन्ध : लाले ने उद्दर्थों को प्राधिक
शुणो का कारण माना था। वास प्रकार के कारणाता
लिमान्त के आधार पर गोतिक पदार्थ की सत्ता है।
स्वीकार करते हैं। - वर्कले के अनुसार गोतिक पदार्थ

⑩

ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀ ਕਾਰਤਾ ਹੋਈ ਹੈ ਸ਼ਕਤੀ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਅਧਿਕ
ਸਾਡੀ ਵਿਖੇਪ ਦੇ ਵਾਡੇ ਵੀ ਕੁਝੇ ਦੱਖਿਆ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ
ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀ ਕਾਰਤਾ ਹੈ ਸ਼ਕਤੀ ਦੀ ਜੀਵਨ ਵਿਤਾਵਾਂ
ਪਾਂ ਪੇਤਾਵਾਂ ਦੀ ਮਾਮੂ ਦੇ ਤੁਰਲਾ ਦੇਖੋ ਰੇਖਾਰ ਕੀ
ਬਿਨੀ ਕੀ ਲੀਖਾਰ ਕਿਥਾ ਗਈ ਹੈ ਕਈ ਕੀ ਅਜੂਲਾਰ
ਰੇਖਾਰ ਦੀ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀ ਸ਼ਲਕਾਰਾ ਦੇਖੋ ਜਾਇਆ ਹੈ

७ अमानवा दोष पर्दि प्रत्ययों के लालों के निम्न छु
ट्टों की दलाल ही अस्त्रिमानित निपुंग शब्द तो रहा
जो वाहन अंशिक पदार्थ के रूप में उचिती जाए तो सारा
की अस्त्रिमानित करना होता तो वह उचार वह उचारण
तो जो अस्त्रिमानित हो जाती है।

प्रैरागिक उत्तमी का इतिहास ; श्रीतिकलांबाद का इतिहास एवं
अन्यान्यवाद वि- आपना हेतु
लक्ष्मी जाति द्वारा समर्पित असूचि प्रत्येक की उत्तमाधारा का
स्थान करते हैं उल्लेखनीय है कि जाति के असूचि प्रत्येक की
भवित्व अद्यता की मात्रा को लिखार लिया गया है।
प्रथमि उत्तमाधार का उत्तम विरोधी भूमि का इतिहास विरोधी है।
श्रीराम अपनी की उत्तमा का उत्तम विरोधी भूमि का इतिहास विरोधी है।

अनुसार अमृत्यु प्रत्ययों का मानव चित्तेन वे महत्वपूर्ण स्पान हैं इसी कारण मनुष्य पश्च द्वे भोग्य घासी के रूप में स्पायित होता है

क्या है? किसी भी सामान्य पद जाति के विचार की ओर सम्पूर्ण वर्ण विशेष का सार है उसे अमृत प्रत्यय कहते हैं जैसे → मनुष्यत्व, गोल जादि। पद वाक्य का पट कहा है कि अनुभव के माध्यम से हमें शुभ प्राप्त होते हैं परन्तु यह शुभों के ज्ञान के रूप में भङ्गन्य की सामना आवश्यक है, इस प्रकार जड़द्रोपी की विधि इक प्रकार है अमृत प्रत्ययों की स्वीकृति का परिणाम है।

बर्बले के अनुसार अमृत प्रत्यय असम्भव है लारे सम में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो विशेषों को शृणु कर सामान्य का निर्माण करे। बर्बले के अनुसार सभी प्रत्यय विशेष लक्ष्य शर्त ही होते हैं हमें अनुभव से विशेषों का ही ज्ञान प्राप्त होता है जैसे हम जब भी किसी मनुष्य की कल्पना करेंगे तो किसी उसमें कुद न कुद विशेषता मनुष्य प्राप्त होती है।

(1)

Philosophy of Religion

धर्म
↓

(1) मूलतः

- आधार के
- विश्वासा पर आधारित
- (प्रमुख पात्राएँ हुस्तिकोंग)
- (विह्वारित करना उद्देश्य)
- (प्रत्येक धर्म सुपने तक सीमित।)

(2) उभयोग जीव के सोबत
की बात।

धर्मवास्तव

धर्मदर्शन

↓

धर्म का उंग
न. ठोकर दर्शन
का उंग है।

दर्शन
↓

परम्परागत रूप से
दर्शन को पारिभावित
करते हुए ऐसा कहा
जा सकता है कि दर्शन
भीलन इति जगत् को
प्रारम्भ एवं अन्त को
आनन्द का - निष्पत्ति
लाल्लिक
समीक्षात्मक
जीविक
मूल्यात्मक
धर्म है।

जीवन → सामाजिक
राजनीतिक
आर्थिक

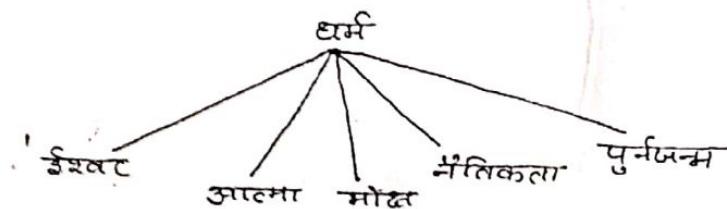
धर्मिक पक्ष : धार्मिक जीवन के विभिन्न पक्षों का दर्शनिक
अधिक धर्मदर्शन है।

Philosophical attitude : निष्पत्ति, जीविक, राजनीतिक, समीक्षात्मक
मूल्यात्मक।

* धर्मिक तो छर्म है ज ली दर्शन है।

⇒ दर्शन की विषय वस्तु प्राप्ति → धर्मदर्शन सीमित।

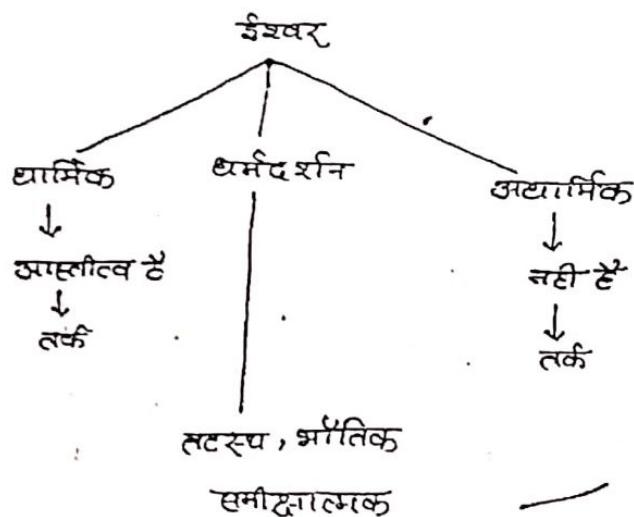
* धर्म के विभिन्न पक्ष :



⇒ धर्मदर्शन का हृष्टिकोण अद्यार्थिक हृष्टिकोण नहीं है। - पठ एक तटस्य हृष्टिकोण है।

→ अन्ततः मठत्व [पक्ष विपक्ष] → दोनों का सूलधारकन

ईश्वर :



सापेद्ध : वेश-काल, परिधिति पर निर्भरता

निपेद्ध : देश-काल, परिधिति पर निर्भरता नहीं

उपरिक्त : उपरिक्त (finite) : हथान के काल से उत्तरवद्

अभीजित (अपरिक्त) : हथान के काल से उत्तरवद् नहीं!

वास्तव : वास्तव \rightarrow वास्तव की परिभौतिकता है।

प्रायः : वास्तव की स्थिति है।

सत्य : सत्य की स्थिति \rightarrow Real entities

वास्तव : वास्तविकता की स्थिति \rightarrow विद्युत आदि जटिलिक स्थितियों की स्थिति है।

जटिलिक : वास्तविक : वास्तविक की स्थिति की स्थिति है।

जटिलिक : वास्तविक : वास्तविक की स्थिति है।

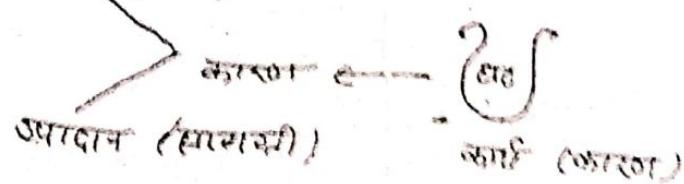
निमित्त कारण : निमित्त कारण एक ऐसी वास्तविक स्थिति है जो वास्तविक स्थिति की स्थिति की स्थिति है। जटिल की स्थिति की स्थिति की स्थिति है। निमित्त कारण कारण से जटिल स्थिति होती है।

उपाधान कारण : उपाधान कारण एक वास्तविक स्थिति है जो निमित्त की स्थिति की स्थिति है। उपाधान कारण की स्थिति की स्थिति है। उपाधान कारण की स्थिति की स्थिति है।

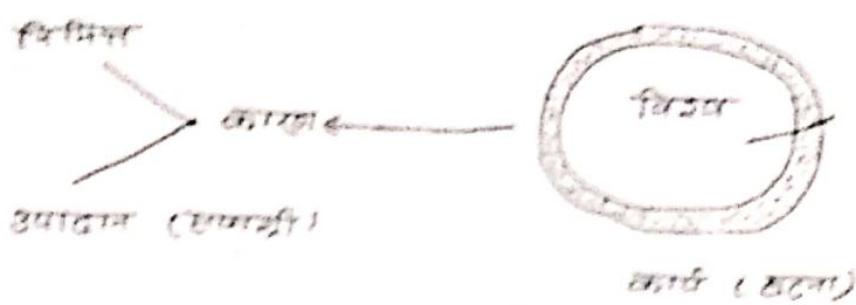
कारणात्मक विवरण : विवरण कारण की स्थिति की स्थिति है।

अवश्य होता है।

निमित्त (कारण)



Transcendental → Immortal
प्राणी → प्राति



Person : विद्यमान → ~~विद्यमान~~ अनुभवम्
आदात् ; विद्यमान → अनुभव
विद्यम् व आदात् ; विद्यमान व विद्यमान
केवल → विद्यम् व विद्यमान
प्रति.
→ अनुभवम् व विद्यमान
दोनों।

विद्यमान : धूर-धूर के अन्दरान्दर व वे
केवल विद्यम् व विद्यमान
विद्यम् व आदात्
आदात् व विद्यम् व विद्यमान

विद्यमान : आदात् के विद्यम् व विद्यमान.

विद्यमान : वा वा विद्यमान : जग के बोल औं बोल के
वाले →
वा जग के बोल
वा विद्यमान के
बोले.

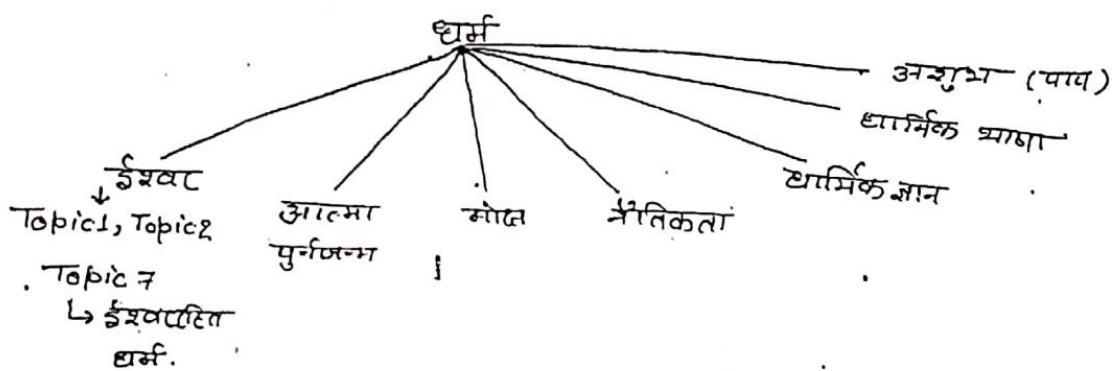
विद्यमान के, विद्यमान के : विद्यमान विद्यमान के विद्यमान

(3)

- * धर्म दर्शन में हमें ईशार्दि व टिंदू अवधारणा का प्रत्याख्यात उपलब्ध करना है।

व्यापक ईंटोंग : धर्मदर्शन स्थापकों से उकताँ हैं।

- * धर्म दर्शन का छोल : एजी. टाचिक का अनुच्छेद



Topic 3

अशुभा : जीं जीतिक होष्टिकों से नहीं होना चाहिए।

└ पाप

जगत् की समस्या → ईश्वर

जगत् की समस्या } जान बङ्गकर → दपालु रही
 ऊसमध्य → सर्वशाक्तिमान रही

Topic 4

उम्रता : नित्य, राश्वत, अपरिवर्तनशील

अपरिवर्तनशील : पुनः - पुनः प्रग धारण करना।

पीछन से दूतों की समाप्ति → मोक्ष

कर्म निपम < उत्तदा कर्म - उत्तदा फल
 शुदा कर्म - शुदा फल

⇒ कर्मनिपात , कारणता सिद्धान्त का धृतिक द्वेष में प्रयोग है

कारणता सिद्धान्त : कारण के कार्य में कुद समरूपता

(तेल घे दी तेल)

आच्छा फल → उच्छ्वे कर्म

कर्मनिपात → आत्मा की जमरता

पुर्जन्म

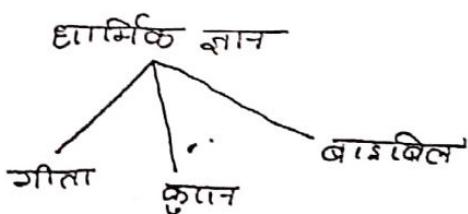
मोक्ष

वेदों के छत्तर पर जीवन का चरम लक्ष्य → उक्ति

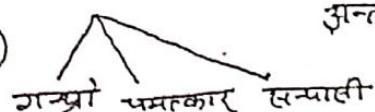
दर्शन के छत्तर पर जीवन का चरम लक्ष्य → मोक्ष

ज्ञाप वेदान्त के छत्तर पर चरम लक्ष्य → मानव व्यवहार

⇒ Topic 5 :



श्रुति : देव प्रकाशना ↔ Revelation (शिखिपद्म उद्घाटन)
(Shruti)



⇒ Topic 6 :

धार्मिक अनुभव ↔ दैनिक अनुभव

↳ Internally
contact
→ confidence

↳ जागारण अनुश्रूति

↳ धार्मिक अनुश्रूति की परायाणा

आनन्दनिष्ठा ← रस्तपाल्कानुश्रूति दोहरी है

Topic: 5: राजनीतिक विचारधाराएँ: अराजकतावाद, मार्क्सवाद एवं समाजवाद

पूजीवाद	समाजवाद	मार्क्सवाद
→ साधनों के उपयोग की स्वतन्त्रता	→ समानता एवं प्रशोध जोड़	→ पोषण के अनुसार काम; आवश्यकता के अनुसार सजद्दी

समाजवाद (Socialism): वह ज्ञापिक और राजनीतिक सिद्धान्त जिसके अनुसार समाज में उत्पादन, वितरण और विनियोग के उत्तर्य साधनों पर सर्वजनिक हासिल और जन्मन्त्रण स्थापित होना चाहिए ताकि सरकार ऐसी नीतियां बना सके जिनसे व्यक्ति को अपनी प्रतिश्रृंखला और परिवार के बल पर विकास का समुचित अवसर निलंबक हो।

साम्प्रदाद (Communism): इस विचारधारा के अनुसार एक ऐसी समाज-व्यवस्था का स्थापना होना चाहिए जिसमें जिजी संपत्ति (Private Property) का कोई स्थान नहीं होगा, वर्ग भेद सिट जोड़ा, और प्रायः सभी पुरानी सेवाएँ और मानवताएँ समाप्त होनी-चाहिए। पर समाजवाद की इन अवधार को व्यक्त करता है।

मार्क्सवाद (Marxism): मार्क्सवाद वह सिद्धान्त है जिसके अन्तर्गत मानव - समाज की समस्याओं को इतिहास के माध्यम से समझने का उपलब्ध किया जाता है और इतिहास को परस्पर-विरोधी शास्त्रों और वर्गों के संघर्षों की प्रक्रिया के तथा में देखा जाता है। पर समाज की पूर्णीपति वर्ग तथा क्षमदार वर्ग व अग्नों में बाटता है तथा पर अवैज्ञानिक कला है तथा भरीबी है। सुवित्ति तथा ~~समाज~~ समानता की स्थापना के लिए मजदूर वर्ग को प्रभीपति वर्ग के विरुद्ध लंगित होना होगा।

अराजकतावाद (Anarchism): वह सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी भी प्रकार सरकार अनावश्यक वा अवानुषीय ही नहीं संवालन,

परं तर्क दिया जाता है कि मनुष्य प्रलत विवेकरील, निष्कप्त और सापरापण छानी है। अतः पादि समाज इही दंग से लगातित हो तो किसी प्रकार के बल-भयोग की जरूरत नहीं होगी,

Topic: 6: मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, बहुसंकृतिवाद - आदर्शशूल्प.

⇒ उन तीनों सिद्धान्त JEL की द्यावना के लिए आवश्यक हैं परन्तु इसमें बहुसंकृतिवाद एक विवादित सिद्धान्त है।

multiculturalism → विरोध
→ दलितांशी → राष्ट्रसंस्कृति का अन्यथा
→ लाम्पांशी → आर्थिक असमानता परिवर्ष विवाद
→ लालीवादी → तर्क → उन चुनौतियों के लिए समानता एवं उपाय देना
पराईस

Topic: 7: विकास एवं सामाजिक उन्नति.

→ ऐसी जागृति sustainable development

→ व्यगति → भूकृष्णता

× अधोगति

Topic: 8: लिंग भेद : उसका गत्यापि अंतिम शेद से न होकर वाले सामाजिक वा सांकृतिक आद्यात एवं विविधों के सम्बन्ध में जाने वाले शब्द हैं।

Topic: 9: जाति भेद: गाँधी द्वारा उल्लेख

गांधी
↓
वर्ष व्यवस्था से विलिति के
कारण जाति व्यवस्था

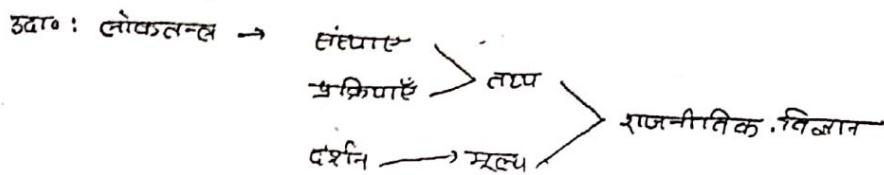
उल्लेखकर
जाति भेद, वर्ष व्यवस्था की समाजिक
परिणामी है वर्ष व्यवस्था को द्वारा

राज० सिद्धान्त

तप्प → च
मूल्य → ought to

राज० दर्शन

मूल्यात्मक विवेचन
व्या टोना चाहिए
मार्गता → concept



लोकतन्त्र - लोकतन्त्र हार्फ्टोफ़ प्रश्नाली है का नहीं ? → राज० दर्शन

दर्शन → उत्तरवत्ता → मुक्ति (liberty)

Imp Definition :

प्रमुख विचारधाराएँ

विद्यार्थाद

① नाभारतीय
पा. आद्वीप

पा. पारंपरागत
पा. व्यास्तिवाद

पा. क

प्रेस्टन

प्रामृस पेन

② स्वारात्मक

पा. आलुमिन

उद्यार्थाद
ग्रीन, लास्टी, जॉर्ज

③ नव-उद्यार्थाद

पा. विचेष्टालोक्यवाद

पा. नाशिक, टैप्ट, बलिन

प्रिल्टन, फ्रीडम्स

④ समातावाद

पा. रात्स

समाजवाद

① स्वप्नलोकीय समाजवाद
(Utopian socialism)

② सेंट चार्ल्स, चार्ल्स
फ्रिप्प, राख्ट औरेन

③ वैज्ञानिक समाजवाद
पा. भास्त्विक्याद

काली मार्स, लेंग्ले
लेनिन, माझी.

④ लोकतात्त्विक समाजवाद
पा. विकासकाद

छज्वर्ड रड्स्टीन.

आदर्शवाद

अन्तर्राजकीयवाद

① ओला

② बाकूनिन

③ क्रौपोट्किन

④ अंधी

⑤ टालेल्टाप

⑥ टालेल्टाप

⑦ टालेल्टाप

⑧ टालेल्टाप

⑨ टालेल्टाप

⑩ टालेल्टाप

⑪ टालेल्टाप

⑫ टालेल्टाप

⑬ टालेल्टाप

⑭ टालेल्टाप

⑮ टालेल्टाप

⑯ टालेल्टाप

⑰ टालेल्टाप

⑱ टालेल्टाप

⑲ टालेल्टाप

⑳ टालेल्टाप

㉑ टालेल्टाप

㉒ टालेल्टाप

㉓ टालेल्टाप

㉔ टालेल्टाप

㉕ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

㉗ टालेल्टाप

㉘ टालेल्टाप

㉙ टालेल्टाप

㉚ टालेल्टाप

㉛ टालेल्टाप

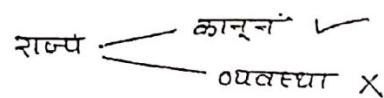
㉜ टालेल्टाप

㉖ टालेल्टाप

उदारवादः

- ① पूर्णिषाद का समर्पन करता है।
- ② निजी सम्पत्ति का समर्पन करता है।
- ③ प्राकृति के नियत व्यवहार हैं। → प्राकृति ही साधा हैं।
- ④ इसका केन्द्रिय मूल्य स्वतन्त्रता है।
- ⑤ यह सोबैद्यानवाद में विश्वास रखता है। → हीमित व्यापार
- ⑥ प्राकृति को तार्किक प्राची (विवेकहीन प्राची) मानता है। → समाज व राज्य प्राकृति में उत्तराधिकार नहीं करना चाहिए।

नकारात्मक उदारवादः ① यह 'हीमित राज्य' पा 'पुलिस राज्य' में विश्वास करता है। हीमित राज्य का अर्थ है इसमें राज्य जो केवल 'विधि व्यवस्था' बनाए रखने का काम करेंगे तभी को पुलिस राज्य भी कहते हैं।



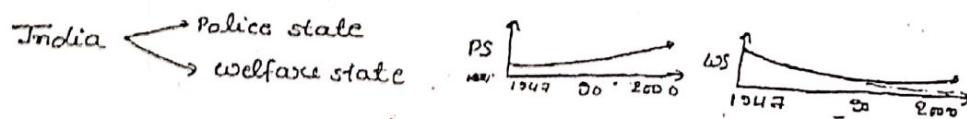
② नकारात्मक उदारवाद अर्थात् यथा में राज्य जो अचलस्थैर्य का समर्पन करते हैं अतः वे 'अचलस्थैर्य की नीति' का समर्पण है।

③ नकारात्मक उदारवाद 'अणुकादी प्राकृति' (Atomised individual) का समर्पण है। इसका अर्थ है अणु की भाँति प्राकृति ही स्वतन्त्र जीवतीत्व है। वह राज्य, पा समाज या समर्पण नहीं है।

④ नकारात्मक उदारवाद 'नकारात्मक स्वतन्त्रता' के विरुद्ध ही समर्पित है। नकारात्मक स्वतन्त्रता का अर्थ है प्राकृति के अधिन में जीवन का आश्रय होना।

(3)

एकारात्मक उदारवाद: ① पहले 'कल्पानाकारी राज्य' का समर्थन करता है। कल्पानाकारी राज्य का अर्थ है ऐसा राज्य जो भवनता के गुणों और विषयों का विवरण वर्णन के उत्पादन का कार्य करता है। कल्पानाकारी राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि देश में राज्य की सक्रिय व्यवस्था को विकास करता है।



- ⑩ एकारात्मक उदारवाद की नियमी सम्पत्ति को विकास करते हुए अधिकारीया ने राज्य के व्यवस्था का समर्थन करता है।
- ⑪ एकारात्मक उदारवाद जी व्याकुलता को समाज से अधिक महत्व देता है लोकिय पहले व्याकुलता के द्वितीय व समाज के द्वितीय को प्रत्यक्ष मानता है।
- ⑫ एकारात्मक उदारवाद 'एकारात्मक व्यवस्था' का समर्थन करता है। एकारात्मक व्यवस्था का अर्थ है व्यक्तित्व के विकास के अवसरों का देना। इसके लिए राज्य के कुछ बंधनों को विकास की विधा दी जा सकता है।
⇒ व्यवस्था के लिए बंधन अवश्यक है। यह बंधन का आर्थिक देना आवश्यक है जैसे → शिक्षा का अनियन्त्रित करना।
- ⑬ एकारात्मक उदारवादी व्यवस्था एवं समाजता को प्रत्यक्ष प्रदर्शनता है।

नव-उदारवाद: नवउदारवाद जीवी शाताली में एकारात्मक उदारवादी विचारों का पुर्वजीवन है।

- ① पहले व्यापक बजार व्यवस्था में विश्वास रखता है।
- ② दूसरा की सीमित व्यवस्था को मानते हैं।
- ③ नायिक ने इस सम्बन्ध में 'सालियालीन प्रदीर्घी राज्य' का

का विचार दिया है अर्थात् राज्य केवल विशेष प्रवृत्ति को
बनाए रखने का कार्य को। नाइक ने 'सीमित लेकिन मजबूत
राज्य' (minimal but strong state) का विचार भी दिया है।

- (i) नवउदारवाद द्वितीयता व समानता को परम्परा विरोधी मानता
है, के केवल कानूनी समानता के समर्थक हैं सामाजिक
आर्थिक समानता के विरोधी हैं उत्तर सामाजिक जारीका
समानता स्थापित करने के विचित्र उदाहरण भी उपलिखित करते
के लिए विशेष प्रोजेक्टों का वे विरोध करते हैं।
- (ii) नव उदारवादी भ्रमणालीकरण के समर्थक हैं।

समतावाद : (Equalitarianism)

- i) पहले निजी सम्पत्ति और बाजार प्रवृत्ति से विश्वास शृंखला है
लेकिन बाजार को निपटित करना पड़ता है।
- ii) पहले कल्पाणकारी राज्य का समर्थन करता है।
- iii) समतावाद द्वितीयता को सहत्या देते हुए भी समानता बनाने पर
शक्ति देता है।

⇒ समकालीन संघर्ष → नव उदारवाद ↔ समतावाद

| जाजीवीक कारक प्रबल → जगारामक व सकारात्मक उदारवाद के संघर्षक
जारीक कारक प्रबल → नवउदारवाद त समतावाद के संघर्षक

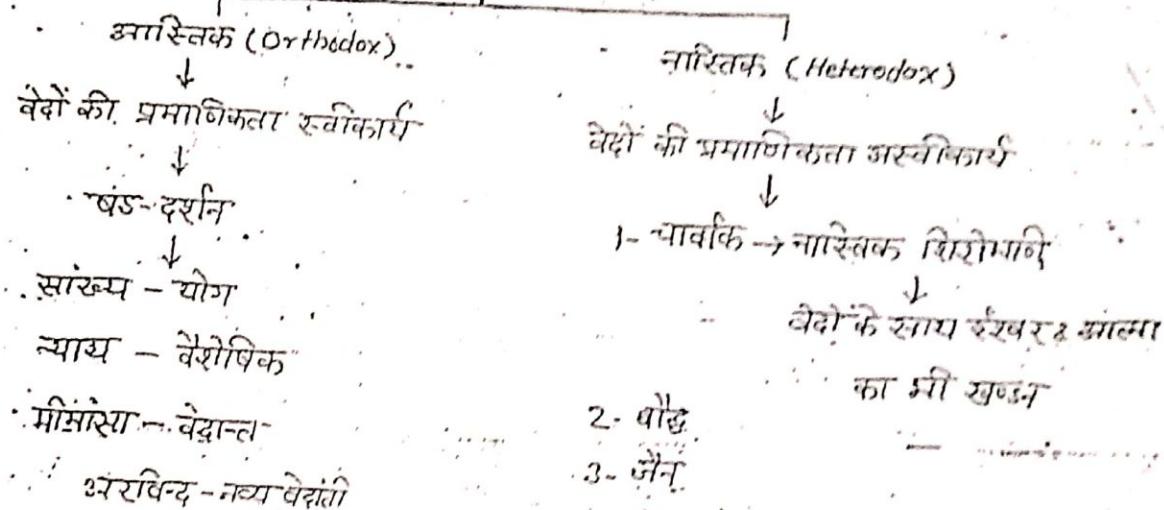
62

प्र॒त्येक

98

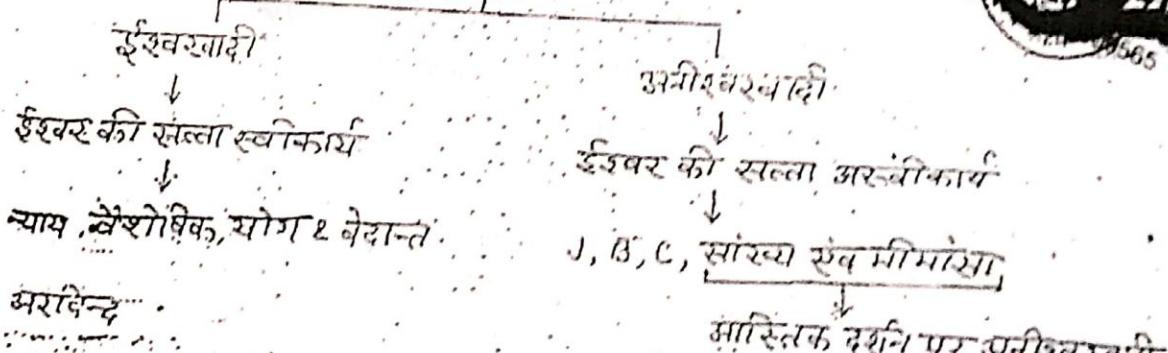
भारतीय दर्शन

वेद



मार्त्तिक दर्शन

ईश्वर



मास्तिक दर्शन पर अग्नीश्वरवादी

नव्य वेदान्त

वेदान्त चेरी व्यवहारिक & युगानुकूल व्याख्या ही नव्य वेदान्त है।

कर्मनियम/कर्मपाद

कर्मनियम के अनुसार आदेष कर्म का व्यवहार उत्तरे

कर्मकर्त्ता-कुराफल सम्पर्य प्राप्त होता है।

कर्त्ता-सिद्धांत / कार्य-कारण

इस सिद्धांत के अनुसार प्रथेष कर्म का कोई न

कोई कारण अवश्य होता है।

ज्ञान मीमांसा-

यह दर्शन ज्ञान की एक प्रमुख शाखा है जिसमें ज्ञान के साथ ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की स्त्रीमा, ज्ञान की प्रमाणिकता, ज्ञान-ज्ञेय विषय-प्रतीक की विवेचना की जाती है।

तत्त्व मीमांसा-

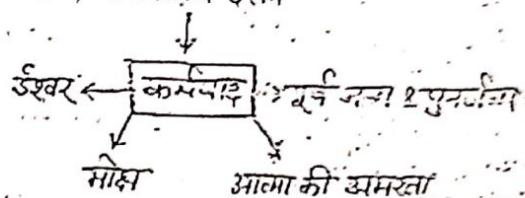
यह दर्शन की एक प्रमुख शाखा है जिसमें गूढ़ तत्त्व-ज्ञान स्मृत्या (एक तत्त्व धारा, द्वैतवाद, बहुतत्त्ववाद), भूततत्त्व के स्वरूप (ज्ञानवाद, अध्यात्मवाद, द्वैतवाद) आदि की विवेचना की जाती है, इसके अलंकृत सत्ता, पदार्थ, प्रैष्य, ईश्वर, आत्मा, जन्मत के मूल तत्त्व, प्रकृति-पूरुष इत्यादि की विवेचना की जाती है।

तत्त्व मीमांसा → प्रधान दर्शन → वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त।

ज्ञान मीमांसा → प्रधान दर्शन → व्याय, मीमांसा।

दोनों मीमांसा → प्रधान दर्शन → चतुर्कि, जीत, वीद्व।

भास्त्रीय दर्शन



9- भारतीय दर्शन यह साक्षा है कि जीवन सक रेंग मध्य की माँति है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रसूति देनी है।

10- भारतीय दर्शन जीवन से दर्शन से संबंधित है, यहाँ प्रत्येक भारतीय दर्शन जीवन जीने की रुचि विशेष पृष्ठवि बताता है जिसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जा सकता है व अतः जीवन से दूर खो को दूर किया जा सकता है।

11- भारतीय दर्शन का विकास छोकिच रूप से / समाजान्वयन रूप से होता है, इससे और पार्श्वात्मक दर्शन का विकास लम्बित होता है।

12- भारतीय दर्शन का विकास रघुन-मंडन प्रक्रिया एवं तहत होता है।

भारतीय दर्शन पर आकृप

1- तिराशावाही

2- पलायनवादी

भारतीय के दृष्टिकोण से या सिद्धित दृष्टिकोण से हम भारतीय दर्शन को निराशावाही का सकते हैं क्योंकि यह जीवन में दूर खो को देखता है, परन्तु अपनी पूर्णता / सरम परिणाम से भारतीय दर्शन को तिराशावाही कहना ठीक नहीं है। उपर्युक्त पूर्णता में यह भाशावाही है क्योंकि प्रत्येक 1.P. में दूर खो को दूर करने के उपाय बताये गये हैं। (+ आर्य सत्य ५५४)

विभिन्न भारतीय दर्शनों में प्रायः स्वा लोकिन् जीवन को काम-महत्व दिया जाया है, जगत में जाति-वित्त के परिवर्याग की बात छोटी गई है, तथा इसी क्रम में भारतीय दर्शन के पलायनवादी होने वाले भारतीयता जाता है। परन्तु इसे पूर्णता स्वीकार नहीं किया जा सकता, बोधिसत्त्व स्थिर प्रसा १. विभिन्न दर्शनों में बाहित जीवन मूलित को अवशालोक्य संतुष्टि



भारतीय दर्शन की मूलमूल विशेषताएँ-

1- कर्म नियम में विश्वास-

चार्किं को छोड़ कर सभी भारतीय दर्शन कर्म नियम में विश्वास करते हैं। इसके अनुसार आदे कर्मों का अच्छा फल तथा दूरी कर्त्ता का बुरा फल कर्त्ता को अवश्य प्रिलबा है।

2- विश्वास की स्वतंत्रता-

विभिन्न भारतीय दर्शनों (प्र.) का विकास विना विभीति द्वारा के स्वतंत्र रूप से हुआ है। विभिन्न विशेषी विचार व्यायामों की उपर्युक्ति इसकी पुष्टि करती है।

3- मोक्ष जीवन का चरम लक्ष्य-

चार्किं दर्शन को छोड़ कर समस्त I.P. मोक्ष को जारी अध्यात्मिक लक्ष्य के रूप में एकीकरण करते हैं।

4- नित्य ज्ञात्मा में विश्वास-

चार्किं ४ बोट को छोड़कर समस्त भारतीय दर्शन जात्मा में विश्वास बनते हैं।

5- हृत्संज्ञा कारण भगवन् / आवेद्या है-

सामस्त दर्शन द्वारा स्वीकार्य।

6- नैतिकता को महत्व-

समस्त I.P. जीवन में नैतिकता के महत्व को प्रदि- स्थापित करते हैं। अपवाह - निष्ठांड चलांक।

7- शुर्वजन्म & सुन्नजन्म में विश्वास-

अपवाह - चार्किं

8- मात्स्यीय दर्शन में दर्शन ए धर्म में समन्वय दिखता है; जैसे जीन दर्शनीय है & प्रसादी है।

रह कर छी औरों के जीवन को और अधिक आनंदधूर्ण बनाने की बात करता है। अतः इस पर चलायनेवाले हीने का आरोप छोड़ता सत्य नहीं है।

- * जीवन में मुक्ति → सद्गुरु मुक्ति
- * मृत्यु के बाद मुक्ति → बिदेह मुक्ति
- * रथयात्रि प्रजा → गीता → सुख हुँख से परेह



चारोंक दर्शन

चारोंक शब्द का अर्थ- विभिन्न रूप है-

- 1- चारू + चारू = रुद्ररुद्रन
- 2- चारोंक नामक ऋषि द्वारा ग्रन्थिपादित होने के काळ।
- 3- चारोंक नमी रात्रि से बताई जिसका अर्थ है - 'बजाए'। यह नमी जैसे बालों / नीतिक मूल्यों को चबा जाता है।
- 4- वृद्धरूपति द्वारा संग्रहित दर्शन। अशुशुर संग्रह में अवृत्ति की काजीर करने के लिए ग्रन्थिपादित विभाग था।

पाठ्यक्रम

(i) ज्ञान का सिद्धान्त या ज्ञान सीमाओं का

(ii) अतीर्थीय इलाजों का प्रभावकारी

अनुवादीत / अव्याकृत / इन्डोट्रांस्लेप (transliteration)

प्रमा → अमा → अम्ब → अमान

ग्राह्य → अथम → वैया → जाता

अनुमत्व → अनुभव

अनुभव → अनुभव

यथात् अनुभव → चेतनामा + वस्तु के व्याप्ति के अनुसार अनुभव के दो विभिन्न रूप हैं।

दोनों अनुभव

के अनुभव → ग्राह्य अनुभव → वैया के विभिन्न रूप → इनमों को दोनों अनुभव हैं।

* क्षमा की प्राप्ति का जागर- क्षमा के लिए शास्त्र ग्रन्थिपादित का आवश्यक।

* क्षमा के लिए उपचार- क्षमा, अनुमान, अनुभव, अनुभव, अनुभव, अनुभव, अनुभव।

* उपचार- उपचार के विवरण के लिए जानें।

* क्षमा- क्षमा की भौतिकता और ग्रन्थिपादित का अनुभव।

अवाद्यों के संदर्भ में क्षमा की विभिन्न रूप हैं।